بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 10.03.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अधिक से अधिक वाक़फ़ीन-ए-नौ को जामिअः अहमदिय्यः में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आना चाहिए

वालिदैन बचपन से ही लड़कों को इस ओर ध्यान दिलाएँ तथा उनका ऐसा प्रशिक्षण करें कि उनमें जामिअः अहमदिय्यः में प्रवेश की लगन हो

पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि उन्होंने प्रबन्धन की दृष्टि से, जो भी उनपर भार डाला गया है, उसका आज्ञापालन करना है तथा अपने आज्ञापालन का नमूना दिखाना है और चुप रहना है ताकि जमाअत में व्याकुलता उत्पन्न न हो

सदरान और उमरा से भी मैं यही कहता हूँ कि मुरब्बियों के आदर सम्मान को स्थापित करना उनका काम है तथा सबसे बढ़कर मुरब्बी का आदर सतकार करने वाला तथा सहयोग के साथ और मशवरे के साथ चलने वाला सदर जमाअत और अमीर जमाअत को होना चाहिए

न ही सदर अथवा अमीर को पूरे अधिकार अपने हाथ में रखकर अपनी इच्छापूर्ति का प्रयास करना चाहिए तथा न ही मुरब्बियों को अपना विचार उचित समझकर उसके अनुसार कार्य करने अथवा कराने का प्रयास करना चाहिए, बल्कि परस्पर सहयोग से काम लें

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला की कृपा से अब विश्व के अनेक देशों में जामिअः अहमदिय्यः की स्थापना हो चुकी है जहाँ से मुरब्बी अपनी शिक्षा पूरी करके कार्य-क्षेत्र में आ चुके हैं और आ रहे हैं। पिछले दिनों यहाँ यू.के. के जामिअः अहमदिय्यः कैनेडा और यू.के. के जामिअः से पास होने वाले विद्यार्थियों की संयुक्त convocationथी। यह शाहिद की डिग्री लेकर अपने आपको मुरब्बी के रूप में पेश करने वाले लोग हैं। उनकी अधिकांश संख्या अपितु लगभग सभी वे हैं जो वक़्फ़-ए-नौ की तहरीक में शामिल हैं। पश्चिमी देशों में रहते हुए जहाँ दुनयादारी तथा भौतिकवाद अपनी चरम सीमा पर है, अपने आपको वक़्फ़ करके अल्लाह तआला के दीन के सिपाहियों में शामिल होने के लिए पेश करना निश्चय ही उनकी सज्जनता तथा दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने की प्रतिज्ञा को पूरा करने की अभिव्यक्ति है परन्तु यह याद रखना चाहिए कि यह अल्लाह तआला की कृपा के बिना असम्भव है इस लिए इसे अल्लाह तआला का फ़ज़्ल समझना चाहिए और उसके आगे झुकते हुए उसके फ़ज़्ल की तलाश सदैव करते रहना चाहिए। मैंने convocation में यह भी कहा था कि जमाअत को मुरब्बियों तथा मुबल्लिग़ों की आवश्यकता है तथा यह आवश्यकता बहुत बढ़ रही है, बल्कि बढ़ गई है इस लिए अधिक से अधिक वाक़फ़ीन-ए-नौ को जामिअः अहमदिय्यः में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आना चाहिए वालिदैन बचपन से ही लड़कों को इस ओर ध्यान दिलाएँ तथा उनका ऐसा प्रशिक्षित करें कि उनमें जामिअः अहमदिय्यः में प्रवेश की लगन हो।

वाक़फ़ीन-ए-ज़िन्दगी को प्रयास करना चाहिए कि जमाअत में दाख़िल हों तथा जैसा कि मैंने कहा इसके लिए उनके माता पिता को तय्यार करना चाहिए। इस समय मैं कार्य-क्षेत्र में आने वाले मुरब्बियों के मस्तिष्क में जो कुछ प्रश्न उभरते हैं, जिनको वे बयान भी कर देते हैं अथवा पूछते हैं, उनकी चर्चा करना चाहता हूँ। मुरब्बी यह प्रश्न

करते हैं कि हमारे कामों में सदर जमाअत किस सीमा तक हस्तक्षेप कर सकते हैं, हमारी क्या सीमाएँ हैं तथा उनकी परिधि क्या है। कई बार मुरब्बी एक बात को प्रशिक्षण की दृष्टि से उचित समझकर जमाअत में लागू करने का प्रयास करता है तो सदर जमाअत कहता है कि मैं नहीं समझता कि इसको इस प्रकार करना चाहिए। तो मुरब्बियों को पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि प्रबन्धन की दृष्टि से जो भी नियुक्त किया गया है उसका आज्ञापालन करना है तथा अपने आज्ञापालन का उदाहरण दिखाना है यदि कोई अनुचित बात है तो अपने नैशनल अमीर अथवा सदर को बताएँ अथवा केन्द्र को बताएँ, मुझे भी लिख सकते हैं। इसी प्रकार सदर साहिबान और अमीर साहिबान से भी मैं यह कहता हूँ कि कि मुरब्बियों के आदर सम्मान को स्थापित करना उनका काम है तथा सबसे बढ़कर मुरब्बी का आदर सतकार करने वाला तथा सहयोग के साथ और मशवरे के साथ चलने वाला सदर जमाअत और अमीर जमाअत को होना चाहिए तथा इसी प्रकार अन्य ओहदेदार भी अपनी अपनी परिधि में मुरब्बी के साथ सहयोग करने वाले हों तथा मुरब्बी भी सम्पूर्ण विनम्रता एवं तक़्वा के साथ सदर जमाअत या अमीर जामअत के साथ सहयोग करे। उद्देश्य तो हमारा एक है कि जमाअत के लोगों की शिक्षा व प्रशिक्षण, जमाअत के निज़ाम की प्रतिष्ठा स्थापित करना, ख़िलाफ़त से सम्बंध स्थापित करना तथा तौहीद का क़याम करना, इस्लाम की वास्तविक शिक्षा दुनया में फैलाना, इसमे परिधि एवं अधिकारों का क्या औचत्य है। आपस में एक होकर काम करना चाहिए तथा इस विषय में अल्लाह तआला के इस कथन को सामने रखना चाहिए कि تَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ अर्थात- नेकी और तक़वा के कामों में आपस में एक दूसरे से सहयोग करो। जमाअत की सेवा चाहे वह किसी भी रंग में करने का सामर्थ्य मिल रहा हो उससे बढ़कर और कोई नेकी नहीं है तथा सेवा करने के लिए तक़वा भी अनिवार्य है। जमाअत की सेवा में तक़वा ही है जो वास्तविक सेवा की तौफ़ीक़ दे सकता है। यह काम तो है ही अल्लाह का भय दिल में रखते हुए उसकी प्रसन्नता प्राप्ति का। यह देखने में आया है कि कई बार जहाँ तनिक सी भी सदर अथवा ओहदेदार अथवा मुरब्बियों के सम्बंधों में कमी है अथवा कोई तनिक सी भी शिकायत आपस में पैदा हुई है तो वहाँ शैतान भीतर घुसने का प्रयत्न करता है तथा नेकी और तक़वा की जड़ें हिलनी शुरु हो जाती हैं। कुछ मुरब्बी के शुभचिंतक बनकर उसे कहते हैं कि तुम्हारे साथ सदर जमाअत ने अच्छा व्यवहार नहीं किया तथा कुछ लोग सदर जमाअत को कहते हैं कि मुरब्बी को यह व्यवहार नहीं करना चाहिए था। परिणाम स्वरूप लोगों में फिर बेचैनी पैदा हो जाती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि देखो वह जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जो एक दूसरे को खाए और जब चार मिलकर बैठें तो अपने एक भाई की शिकायत करें तथा आलोचनाएँ करते रहें। फ़रमाया, ऐसा कदापि नहीं करना चाहिए बल्कि एकता में चाहिए कि शक्ति आ जाए, एकत्र हो जाओ, एक बन जाओ ताकि शक्ति पैदा हो, उसमें शक्ति पैदा करो तथा एकता पैदा हो जावे जिसके द्वारा प्रेम आता है तथा बरकतें पैदा होती हैं। फ़रमाया कि आचरण की शक्तियों को सुदृढ़ किया जावे और यह तब होता है जब सहानुभूति, प्रेम, क्षमाशीलता और दया को फैलाया जावे और समस्त प्रवृत्तियों पर दया तथा दोष छुपाने को प्राथमिकता दी जावे।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- यह अभिप्रायः नहीं कि ख़ुदा न करे जमाअती ओहदेदारों, सदर या अमीर तथा मुरब्बी के बीच जमाअतों में साधारणतः मतभेद पाया जाता है। नहीं, यह बात कदापि नहीं है। ये सारी बातें मैंने खोलकर इस लिए बता दीं हैं कि सदर अमीर अथवा मुरब्बियों को पता हो कि उनका काम बड़ा व्यापक है तथा एक महत्त्व पूर्ण लक्ष्य हमारे सामने है और यदि कभी ख़ुदा न करे आपस में मतभेद उत्पन्न हो तो फिर वह तुरन्त दूर होना चाहिए। क्यूँकि कई बार देखने में आया है कि आपस का मतभेद आपस तक नहीं रहता बल्कि जमाअत के लोगों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है तथा शैतान, जैसा कि मैंने पहले भी कहा, इसके द्वारा अनुचित एवं पथभ्रष्ट करता है इस लिए सदैव दोनों अपने सामने यह बड़ा उद्देश्य रखें कि जमाअत की शिक्षा, आध्यात्म तथा प्रशिक्षण का जो भार उन पर डाला गया है, वह दोनों ने मिल जुलकर निभाना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बड़े स्पष्ट शब्दों में यह फ़रमाया है कि उपयुक्त परिणाम उसी समय प्राप्त हो सकते हैं जब आपस

में मिल जुलकर काम करो। आपने फ़रमाया कि जो काम दो हाथों के मिलने से होना चाहिए वह केवल एक व्यक्ति के हाथ से पूरा नहीं हो सकता तथा जिस मार्ग को फ़रमाया, दो पाँव मिलकर तय करते हैं वह केवल एक ही पाँव से तय नहीं हो सकता।

अतः न ही सदर अथवा अमीर को समस्त अधिकार अपने हाथ में रखकर अपनी इच्छा पूर्ति का प्रयास करना चाहिए और न ही मुरब्बी को अपना विचार उचित समझकर उसके अनुसार कार्य करने अथवा कराने का प्रयास करना चाहिए बल्कि परस्पर सहयोग से काम करें तथा क्यूँकि मुरब्बी का दायित्व जमाअत की तर्बियत है और जैसा कि मैंने कहा कि उसका दीन का ज्ञान भी अधिक है अथवा साधारणतः होता है और होना चाहिए तथा उसे दीन के ज्ञान को बढ़ाते भी रहना चाहिए और रूहानियत को बढ़ाते रहने का भी प्रयास करते रहना चाहिए इस लिए उसके तक़्वा का स्तर सामान्य लोगों की तुलना में अधिक होना चाहिए। जब इस बात को मुरब्बी समझ लेंगे तथा इसके अनुसार काम करेंगे तो ओहदेदारों तथा जमाअत के लोगों के बीच स्वयं ही मुरब्बियों की एक प्रतिष्ठा बन जाएगी। सदर जमाअत तथा अमीर जमाअत को याद रखना चाहिए कि जहाँ प्रबन्धक अधिकारी होने के कारण जमाअत के निज़ाम को सुचारू रूप से चलाना इनका दायित्व है तथा इस काम में ख़लीफ़-ए-वक़्त ने उनको अपना प्रतिनिधि बनाया हुआ है इसी प्रकार जमाअत का दीनी तथा रूहानी स्तर एवं प्रगति तथा इसके लिए सम्भावित साधन उपयोग में लाने का भार मुरब्बियों पर है तथा वे इस विषय में ख़लीफ़-ए-वक़्त के प्रतिनिधि हैं। अतः अमीर, सदर तथा मुरब्बियों का परस्पर सहयोग होना चाहिए तथा एक योजना बद्ध रूप में काम करना चाहिए तभी वे प्रबन्ध की दृष्टि से जमाअत को सुदृढ़ बना पाएँगे तथा आध्यात्मिक एवं शैक्षिक स्तर भी प्रगति करते चले जाने वाले होंगे।

पहले भी मैं संक्षेप में चर्चा कर आया हूँ, पुनः कह देता हूँ कि सदर और अमीर तथा समस्त जमाअत के ओहदेदारों का काम अपितु दायित्व है कि मुबल्लिग़ बल्कि जितने भी वाक़्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी हैं उनका आदर सम्मान अपने दिल में भी पैदा करें तथा जमाअत के लोगों के दिलों में भी पैदा करें। उनका आदर करना तथा कराना आप लोगों का काम है ताकि मुरब्बी और मुबल्लिग़ तथा वाक़्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी के स्तर का महत्त्व स्पष्ट हो तथा अधिक से अधिक युवा जमाअत की सेवा के लिए अपने आपको पेश करें। युवा वाक़्फ़ीन-ए-नौ को भी सम्पूर्ण रूप से अपने आपको इस सेवा हेतु पेश करने के लिए प्रत्यक्ष प्रेरणा भी चाहिए जो उनकी लगन को उभारे। वाक़्फ़ीन-ए-नौ युवाओं को तथा कार्य-क्षेत्र में युवा मुरब्बियों को भी मैं यह कहना चाहूँगा कि दुनया चाहे आपके स्तर को समझे या न समझे, कोई सदर अमीर अथवा ओहदेदार बल्कि कोई जमाअत का आदमी भी आपका आदर सतकार करे या न करे, आपने अल्लाह तआला के साथ क़ुर्बानी करने की जो प्रतिज्ञा की है उसे नेक भावना से निभाते रहें। जब मुरब्बी बन गए तो फिर प्रत्येक बात में ख़ुदा तआला के आगे ही झुकना है तथा लोगों के व्यवहार की कोई चिंता नहीं करनी। यदि कोई शिकायत पैदा हो भी जाए तब भी बजाए बन्दों के सामने रखने के, ख़ुदा तआला के सामने रखना है। अतः यदि ओहदेदार जमाअत के लिए उपयोगी अस्तित्व नहीं बनता तो ख़ुदा तआला से दुआएँ माँगें कि ऐसे ओहदेदार से अल्लाह तआला जान छुड़ा दे। इसी प्रकार मैं ओहदेदारों तथा मुरब्बियों दोनों को यह बात भी कहना चाहता हूँ कि जब हम जमाअत के लोगों से यह आशा करते हैं कि उनके घरों में ओहदेदारों के सम्बंध में बातें न हों अर्थात नकारात्मक बातें, तो फिर सदर, अमीर तथा ओहदेदार तथा इसी प्रकार मुरब्बियों को भी सदैव इस बात की पाबन्दी करनी चाहिए कि उनके घरों में भी एक दूसरे के विषय में किसी प्रकार की नकारात्मक बातें न हों। हाँ, सकारात्मक बातें अवश्य हों ताकि मुरब्बी की संतान में भी तथा ओहदेदारों की पीढ़ियों में भी निज़ाम-ए-जमाअत और वाक़्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी तथा किसी रंग में जमाअत की सेवा करने वालों का सम्मान पैदा हो। ओहदेदार तथा विशेष रूप से सदरान और उमरा यह भी याद रखें कि जमाअत के लोगों के प्रति भी सदैव प्यार मुहब्बत के पर फैलाएँ। अपनी जमाअत के प्रत्येक सदस्य को यह आभास दिलाएँ कि वे सुरक्षित परों के नीचे हैं। सदा प्रत्येक के साथ विनम्रता तथा मुस्कुराते हुए बात करें। दफ़्तर की कुर्सी आप में अहंकार के बजाए विनयता पैदा करने वाली हो। प्रत्येक ओहदेदार

के भी तथा प्रत्येक मुरब्बी के भी द्वार हर एक व्यक्ति के लिए खुले हों। मामलों के निपटारे में जल्दी किया करें, लटकाया न करें।

ओहदेदारों का सदैव याद रखना चाहिए कि जमाअत का कोई ओहदा भी किसी प्रकार की बड़ाई पैदा करने के लिए नहीं है बल्कि विनम्रता में बढ़ाने के लिए है। इस लिए प्रत्येक निर्णय को तथा प्रत्येक फैसला और प्रत्येक काम अल्लाह तआला का भय दिल में रखते हुए तथा अत्यंत विनम्रता के साथ न्याय की प्रक्रिया पूरते हुए करने का प्रयास करना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अधिकारियों तथा शासकों को यह चेतावनी दी है कि यदि प्रत्येक ओहदेदार इसे सामने रखे तो निःसन्देह अपने काम के स्तर तथा न्याय प्रक्रिया को पूरा करने में कई गुना बढ़ौतरी हो सकती है। एक अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसको अल्लाह तआला ने लोगों का निगरान तथा ज़िम्मेदार बनाया है वह यदि लोगों की निगरानी तथा अपने दायित्व को अदा करने तथा उनकी शुभचिंता में कमी करता है तो उसके मरने पर अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत हराम कर देगा। यह देखें कितनी भयावह चेतावनी है तथा इंसान को हिला देने वाली है यदि ख़ुदा तआला और आख़िरत पर विश्वास हो तो प्रत्येक ओहदेदार अपना प्रत्येक कार्य अत्यंत भय की अवस्था में करे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला को लोगों में सर्वाधिक प्रिय तथा उसके अधिक निकट न्याय प्रिय शासक होगा और बड़ा अप्रिय तथा सबसे अधिक दूर अत्याचारी शासक होगा। अतः अपने दायित्वों को अत्यधिक सूक्ष्मता के साथ अदा करने का प्रयास करना चाहिए तभी न्याय की प्रक्रिया पूरी हो सकती है। इसी प्रकार ज़ैली तंज़ीमों के ओहदेदार भी अपने कर्त्तव्यों को समझें। ज़ैली तंज़ीमें भी हर स्तर पर सक्रिय हों, अन्सार भी लजना भी, ख़ुद्दाम भी। यदि परस्पर सहयोग हो तथा समस्त ज़ैली तंज़ीमें तथा जमाअत का निज़ाम भी सक्रिय हो तो जमाअत की प्रगति की रफ़्तार कई गुना बढ़ सकती है।

एक बात यह भी प्रत्येक ओहदेदार याद रखे कि यदि उसके अपने विरुद्ध भी शिकायत हो अथवा उसके विरुद्ध कोई बात करे उसके सामने, तो उसको सुनने का साहस होना चाहिए। ओहदेदारों में सबसे बढ़कर सहन शीलता होनी चाहिए तथा बात कहने वाले से बदला लेने के बजाए सबसे पहले अपने सुधार का प्रयास करना चाहिए, आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि कहीं मुझमें यह बुराई तो नहीं। यह बात भी न्याय करने के लिए आवश्यक है। जमाअत के लोगों से मैं यह कहना चाहूँगा कि वे भी अपने तक़्वा के स्तर को बढ़ाएँ। नेकी और तक़्वा में सहयोग का उनके लिए भी आदेश है। यदि जमाअत के लोगों के नेकी और तक़्वा के स्तर उच्च कोटि के होंगे तो ओहदेदार स्वयं नेकी और तक़्वा की राहों पर चलने वाले मिलते चले जाएँगे। जमाअत के प्रत्येक सदस्य को अपना कर्त्तव्य भी निभाना चाहिए जो उसके ज़िम्मे आज्ञापालन के संदर्भ में किया गया है। यह एक बड़ा कर्त्तव्य है जो जमाअत के प्रत्येक सदस्य के हवाले भी है कि तुम आज्ञापालन करो। अपनी नस्लों के दिलों में भी बिठा दें कि हमने अपना कर्त्तव्य पूरा करना है तथा सुविधा और दुविधा में, प्रसन्नता एवं अप्रसन्नता में, अधिकारों के हनन और अच्छे व्यवहार में प्राथमिकता, अर्थात प्रत्येक अवस्था में आज्ञापालन करना है।

अल्लाह तआला करे कि हमारा प्रत्येक कार्य ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए हो, हम इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे प्रेमी की जमाअत में शामिल होने का हक़ अदा करने वाले हों।